Krishna Nand B.A I Hons

व्यवहार करने लगते हैं। किसी व्यक्ति में परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता कम होती है जिसके कारण भी व्यक्ति का व्यवहार असामान्य दिखता है। असामान्य व्यवहार स्थान, संस्कृति, तथा रीतिरिवाजों से भी प्रभावित होता है। जैसे भारत में अभिवादन करने का व्यवहार जो है वही व्यवहार इंग्लैण्ड तथा अमेरिका में देखने को नहीं मिलता है।

(iii) अनुवांशिकता :— असामान्य व्यवहार का कोई भी कारण यदि मानसिक रोग के लिया जाये तो कई मानसिक रोग अनुवांशिक होते हैं। लेकिन यह धारणा मिथ्या गलत है। कई मानसिक रोग जैसे — मनोविकलता, उन्माद-अवसाद मनस्ताप का अनुवांशिक कारण नहीं होता है। हाँ यह सही है कि इन परिवारों के बच्चे कुसमायोजित व्यवहार को सीख लेते हैं।

(iv) प्रतिभाशाली व्यक्ति असामान्यता के शिकार या कुछ होते हैं :— अक्सर देखा गया है कि प्रतिभाशाली व्यक्ति का भी व्यवहार असामान्य दिखता है। सुकरात, लेनिन, आइंस्टीन, न्यूटन आदि दार्शनिकों तथा वैज्ञानिकों का व्यवहार भी सामान्य से अलग दिखता था परन्तु ऐसे लोग समाज को नई दिशा निर्देश देते हैं तथा उनके लिए नये-नये खोज तथा आविष्कार करते हैं।

(v) मानसिक रोगी असाध्य तथा भयप्रद होते हैं :— असामान्य व्यवहार का कारण यदि मानसिक रोग है तो ऐसे व्यक्ति का व्यवहार असामान्य तथा भयावह होता है। उनका व्यवहार स्वयं के लिए घातक तो होता ही है साथ ही साथ जीवन तथा समाज के लिए भी घातक होता है।

Krishna Nand B.A I Hons ②

2. मानसिक रोगी अपराध को प्रेरित होते हैं।— मानसिक रोग अपराध का स्रोत होता है क्योंकि ऐसे लोगों का व्यवहार निम्न स्तर का तथा दूषित होता है। इनका व्यवहार सामाजिक तथा परिस्थितिजन्य नहीं होता है जिसके कारण इन्हें बार-बार अपराध का सामना करना पड़ता है। व्यक्ति तथा समाज में वे कोई स्थान ही नहीं पाते हैं।

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण।— वैज्ञानिकों द्वारा लगातार यह प्रयास किया जा रहा है कि असामान्यता का कोई स्पष्ट आधार या व्याख्या किया जा सके परन्तु अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है। क्योंकि एक ही व्यवहार कहीं पर सामान्य हो जाता है तो कहीं पर असामान्य। जैसे- समाज में मृत्यु पर रोने का व्यवहार सामान्य दिखता है तो एक समाज में असामान्य —। सामान्यतः असामान्यता के लक्षण को सांख्यिकीय दृष्टिकोण के अनुसार यदि सामान्य वक्र रेखा द्वारा देखा जाए जो निम्न प्रकार का है।—

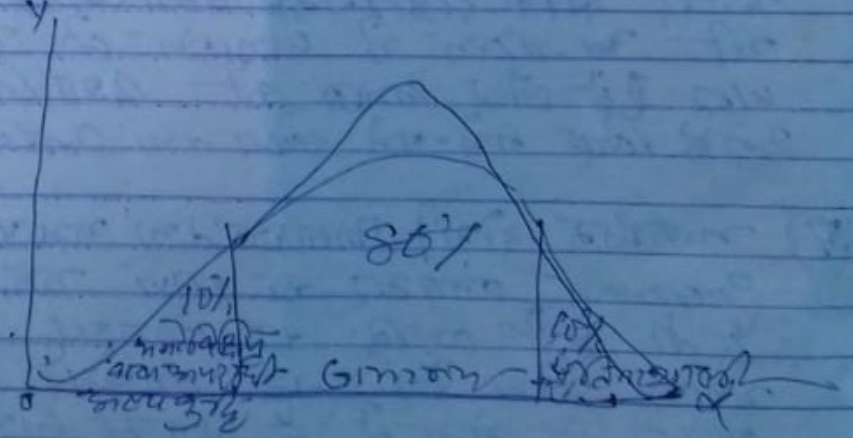

Krishna Nand B.A I Hons (3)

उक्त वक्र को देखने से स्पष्ट होता है कि लगभग 80% लोग बीच में हैं जो सामान्य व्यवहार के होते हैं परन्तु पहले के 10% कम बुद्धि, मनोविक्षिप्त तथा बाल अपराधी होते हैं तथा बाद वाले 10% अति प्रतिभाशाली होते हैं। पहले और बाद वाले व्यक्तियों का व्यवहार बीच के सामान्य व्यक्तियों से भिन्न होता है अर्थात उनका व्यवहार असामान्य होता है।

4. व्यक्तिगत समायोजन की कसौटी भी व्यक्ति के सामान्य तथा असामान्य व्यवहार को दर्शाता है। प्रायः देखा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार एक ही उद्दीपन के लिए अलग-अलग होता है, क्योंकि प्रत्येक की अभियोजन क्षमता अलग-अलग होती है, अर्थात व्यक्तिगत क्षमताओं की भिन्नता में भी असामान्य व्यवहार की धारणा भी आ सकती है।

व्यक्तित्व संगठन द्वारा भी असामान्यता की धारणा दी गई है। यदि व्यक्ति के विचारों, भावनाओं तथा क्रियाओं में समन्वय है तो उनका व्यवहार सामान्य होता है ठीक इसके विपरीत यदि इन तीनों में समन्वय नहीं रहता है तो उनका व्यवहार असामान्य दीखता है ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व Disorganised असंगठित होता है।

5. असामान्य व्यवहार परिपक्वता तथा बुद्धि के आधार पर भी होता है। यदि व्यक्ति में उम्र वृद्धि के साथ-साथ परिपक्वता नहीं आता है तथा जिसमें कम बुद्धि विकसित होता है तो उनका व्यवहार असामान्य होता है।

Krishna Nand B.A I Hons (H)

6. नैतिकता भी असामान्य व्यवहार से सम्बन्धित कारक है। असामान्य व्यक्ति नैतिकता तथा सामाजिक मूल्यों तथा आदर्शों का पालन करने में असमर्थ होते हैं जिसके कारण से उनका व्यवहार सामान्य से अलग हो जाता है।

7. असामान्य व्यक्ति ज्यादातर शारीरिक तथा मानसिक रोगों से ग्रसित हो जाते हैं क्योंकि उनका व्यवहार परिस्थितियों के अनुकूल नहीं होता है। परिणाम स्वरूप वे अक्सर किसी न किसी बीमारी से पीड़ित रहते हैं।

8. डॉ. ब्राउन का दृष्टिकोण :—

असामान्यता के उपर्युक्त दृष्टिकोणों का महत्वपूर्ण है परन्तु इन में कुछ न कुछ कमी है। डॉ० Brown ने असामान्यता की व्याख्या करते हुए कहा है कि "Abnormal Psychological Phenomena are Simply exaggeration (i.e., over developments or under development) or disguised (i.e. perverted) development or The or the normal Psychological phenomena) यानि असामान्यता सामान्य घटनाओं (Phenomena) का ही अतिरंजित या छद्मवेषी रूप है।

असामान्यता के सम्बन्ध में उपर्युक्त दृष्टिकोणों के अध्ययन के पश्चात तथा डॉ. Brown के विचारों से यह ~~[illegible]~~ स्पष्ट होता है कि असामान्यता में मात्रा का अन्तर होता है न कि प्रकार का।